ओम शान्ति। अब बच्चे जानते है हरेक को वर्सा मिलता है बाप से। भाई को भाई से वर्सा कब मिल नां सके। और फिर भाई वा बहिन जो भी है उनको हरेक की अवस्था का पता नही पड़ता है। सब समाचार तो आते है बाप दादा के पास। यह है पेक्टीकल में। हरेक को अपन को देखना है। हम कहां तक याद करता हूं। कहां तक कोई के नाम रूप में फंसा हुआ हूं। हमारी आत्मा की वृती कहां 2 जाती है। आत्मा खुद जानती है अपनको आत्मा ही समझना पड़े। हमारी वृति एक ही शिव बाबा तरफ हो जाती है या और कोई के नाम रूप तरफ जाती है। जितना हो सके अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। और सब भूलते जाना है। अपनी दिल से पूछना है हमारी दिल ऐक के और कहां भटकती तो नही है। कहां धन्धे धोरी में या घर गृहस्थ मित्र सम्बन्धी यो आद तरफ बुधि जाती तो नही है। अन्तरमुख होकर जाच करनी है। जब यहां आकर बैठते है तो अपनी जाच करनी है। यहां कोई नां कोई सामने बैठते है। वो भी तो शिव बाबा को ही याद करते होंगे। ऐसे नही अपने बच्चो को याद करते होंगे। याद तो शिव बाबा को ही करना है। यहां बैठे भी शिव बाबा की याद में है। फिर भल कोई आखें खोल बैठे है वा आखें बन्द कर बैठे है। यह तो बुधि से समझ की बात है। अपनी दिल से पूछना है बाप क्या समझाते है। हमको तो याद करना है एक को। यहां तो जो बैठने वाले है वो तो शिव बाबा की याद मुं बैठे होंगे। तुमको नही देखेंगे। क्योंकि उनको तो कोई की अवस्था का पता ही नही है। हर प्रकार का समाचार बाप के पास आता है। वो जानते है कौन 2 बच्चा अच्छा है। जिनकी लाईन बिलकुल क्लीयर है। और कहां भी बुधियोग नही जाता है। ऐसे भी होते है कोई का बुधि योग जाता है वो मुरली सुनने से चेन्ज भी हो जाते है। फील करते है यह हमारी भूल है। हमारी द्रष्टी वृती बरोबर रांग है। अब उनको राईट करना है। यह बाप ही समझाते है। भाई2 को नही समझा सकते। यह बाप ही देखते है इनकी वृति कैसी है। बाप को ही दिल का हाल सुनाते है। शिव बाबा को बताते है तो दादा भी समझ जाते है। हो को सुनाने से देखने से समझते है। जब तक सुने नही तब तक उनको क्या पता कि यह क्या करते है। ऐक्टविटी से सर्विस से समझ जाते है। इनको बहुत देहअभिमान है। इनको कम। इनकी ऐक्टविटी ठीक नही है। कोई नां कोई के नाम रूप में फंसा रहता है। इनकी याद में रहते है। कहां नां कहां वृति जाती है। बाबा पूछतेभी है। कहां व्यापार तरफ बुधि जाती है बच्चों तरफ बुधि जाती है। कोई2 साफ बताते है। कोई2 फिर नाम रूप में फंसे हुए ऐसे है जो बताते ही नही है। अपना ही नुकसान करते है। बापको बताने से हलकाई हो जाती है। नाम रूप में फंसने का विकर्म जो बना वो बताने से उनको क्षमा होती है। और फिर आयन्दा के लिए भी सम्भाल करनी है। बहुत है जो अपनी वृति सच्च नही बताते है। बापको बताने में लजा आती है। जैसे कोई उलटा काम करते है तो सजर्न को बताते नही है। समझते है यह क्या समझेंगे। इसलिए छिपाते है। परन्तु छि पाने से बिमारी और ही वृधि को पाती है। यह भी ऐसे है। बापको बताने से हलके हो जाते। नही तो वो अन्दर रहने से भारी रहेंगे बापको सुनाने से फिर वो दुबारा नही करेंगे। बाप समझते है यह हलके हो गए है। आगे के अपने पर खबरदार भी रहते है। बापको बतायेंगे नही तो वो वृधिको पावेगा। बाप जानते है यह सर्विस एबुल भी बहुत है। कुआलिफिकेशन भी कैसे रहता है। कोई साथ लटकतेको नही है। हरेक की जन्म पत्री को देखते है। फिर उतना उनसे लव रखते है। कशिश करते है। कोई तो बहुत अच्छे है। कब भी कहां उनका बुधियोग नही जाता है। हां पहले जाता था। अब खबरदार है। बताते है बाबा मैं अब खबरदार हुं। आगे बहुत भूले करते थे। अभी बिलकुल खबरदार हूं। समझते है बरोबर देह अभिमानी होने से ही भूले होगी। फिर पद तो भ्रष्ट हो जावेगा। भल किसको पता नही पड़ता है परन्तु पद तो भ्रष्ट हो जावेगा नां। दिल में सफाई

इसमें बहुत चाहिए। जैसे इनकी (लक्ष्मी नारायण) की आत्मा में सफाई है नां। तब तो उच्च पद पाया है। इनकी बुधि में बहुत सफाई रहती है। कोई2 के लिए समझा जाता है इसकी नाम रूप की तरफ वृति है। देही अभिमानी होकर नही रहते इसकारण पद भी कम होता गया है। राजा से लेकर रंक तक। नम्बरवार पद तो है नां। यह क्यो होता है इसको भी समझना चाहिए। नम्बरवार तो जरूर बनते ही है। कलाएं कम होती जाती है। जो 16 कला सम्पूर्ण है वो फिर 14 कला में जाते है। बीच में 13 कला पेने 14 कला ऐसे धीरे2 कम होते2 कलाएं उतरते तो जरूर है। 14 कला है तो भी अच्छा। फिर वाम मार्ग में उतरते है तो विकारी बन जाते है। आयु ही कम हो जाती है। फिर फिर रजो तमो बनते जाते है। कम होते2 पुराने बन जाते है। आत्मा शरीर दुनियां सब पुरानी हो जाती है। यह सारा ज्ञान अभीतुम बच्चो में है। तुमको ही समझाया जाता है कैसे 16 कला से फिर नीचे उतरते2 फिर मनुष्य बन जाते है। देवताओ की मत तो होती नही। बापकी मत मिली फिर 21 जन्म मत की दरकार नही रहती। बाप से वर्सा मिल गया यह ईश्वरीय मत तुम्हारी 21 जन्म चलती है। फिर जब रावण राज्य होता है तो तुमको रावण मत मिलती है। दिखाते भी है देवताए वाममार्ग में जाते है। और धर्म वालो की ऐसी बात नही होती। देवताए जब वाम मार्ग में जाते है तब बाद में दूसरे धर्म वाले आते है। उनसे तुम्हारा कोई कनेक्शन नही है। तुमको अपनी ही तात रहे। यह बाते बाप तुमको ही समझा रहे है। बच्चे अभी तो वापिस जाना है। यह पुरानी दुनियां है। यह भी ड्रामा में मेरा पार्ट है। पुरानी दुनिया को नया बनाना। यह भी तुम समझते हो। दुनिया के मनुष्य कुछ भी नहीं जानते। तुम इतना समझाते हो फिर कोई अच्छी रीत समझते ही नहीं हैं। कोई तो अपने ही मत देते हैं। जैसे उसने कहा तुम स्वर्ग के चित्र में कृष्ण के साथ सिर्फ भाईयां ही दी है। क्या वहां सिर्फ फिमेल्स ही होते हैं। डांस आद जब करते हैं उसमें तो एक फिमेल एक मेल ऐसी2 जोड़ी होती है। इनमें सिर्फ एक फिमेल्स एक कृष्ण से क्यों दिखाई है। बात तो ठीक है। क्योंकि यहां का सुना हुआ भी है कि इन्हों पास ब्रहमाकुमारियां ही हैं। तो डीरामा निकाला। बाबाने जब सुना तो कहा बात तो बरोबर ठीक ही है। कृष्ण बाकी सब गोपियां डांस कैसे करेंगे। बाबा भी कहते हैं तुम अच्छी रीत पुरूषार्थ करेंगे तो वहां भी प्रिन्स प्रिन्सेज बनेंगे। डांस करेंगे। तो उनको यह बात ध्यान में आई। यह तो हो नहीं सकता। फिर कहा तपस्या में जो बैठे हैं उसमें भी फिमेल्स आद की क्यों। दो दो क्यों नहीं रखते हो। यह तो समझा सकते हो मेजोरिटी फिमेल्स की है। वहां तो मेल-फिमेल जोड़ी ही होती है। क्योंकि प्रवृति मार्ग है ना। यहां मातायें जास्ती है इसलिए उन्हों को जास्ती मान दिया है। यहभी तुम सिध कर सकते हो। तो ऐसी2 कनेक्शन करनी पड़े। अभी ट्रान्सलाईट चित्रों में कैसे कनेक्शन करेंगे। कितना नुकसान हो जावेगा। यह तो होता ही है। यह पाण्डव गवर्मेन्ट अथवा ईश्वरीय गवर्मेन्ट है। वहां है देवताई गवर्मेन्ट। कायदे सिरे। यह है ईश्वरीय गवर्मेन्ट। जानते हो हम डबल सिरताज बनते हैं। इसलिए गवर्मेन्ट कहें तो भी ठीक है। डिटी गवर्मेन्ट स्थापन कर रहे हैं। यहतुम लिख सकते हो। डरने की बात ही नहीं। ब्रहमा द्वारा देवी देवता राज्य की स्थापना। तो गवर्मेन्ट ठहरी नां। बेहद का बाप अभी संगम पर स्थापना कर रहे है। जो देवी-देवताएं थे अभी नहीं हैं। फिर से श्रीमत पर डीटी गवर्मेन्ट स्थापन कर रहे हैं। हम ब्रहमाकुमार-कुमारियां श्रीमत पर आदी सनातन देवी-देवता धर्म अथवा स्वराज्य, विश्व में शान्ति स्थापन कर रहे हैं। यह ल०ना० जब थे तो पवित्रता, सुख-शान्ति सब थी। पवित्रता की बात ही मुख्य है। मनुष्यों को यहभी पता नहीं है कि सतयुग में देवी-देवताएं पवित्र ही थे। वह तो समझते हैं देवताओं को भी बच्चे आद हुये हैं। वहां योगबल से कैसे पैदाईश होती है यह किसको भी पता नहीं हैं। कहते हैं ना सारी आयु ही पवित्र रहेंगे। तो फिर भी बच्चे आद कैसे होंगे। उन्हों को समझाना है इस समय पवित्र होने से फिर 21 जन्म हम

पवित्रहते हैं। गोया श्रीमत पर हम वायसलेस वर्ल्ड स्थापन कर रहे हैं। चीदे2 अक्षर बुधि ठूसनी चाहिए। हम श्रीमत पर सतयुगी देवी गर्वमेन्ट स्थापन कर रहे हैं। श्रीमत है ही बाप की। गायन भी है मनुष्य से देवता... अभी सभी मनुष्य हैं। जो फिर देवता बनने हैं। आधा कल्प सिर्फ देवी,-देवतायें ही थे। फिर पतित बने हैं। अभी श्रीमत पर हम फिर से डिटी गर्वमेन्ट स्थापन कर रहे हैं। इसमें एमरिटी तो बहुत मुख है। आत्मा को ही पवित्र बनना है। आत्मा ही पत्थर बुधि बनी है। एकदम क्लीयर कर बताओ। बाप ने ही डिटी गर्वमेन्ट की स्थापना की थी। जिसको ही पैराडाईज़ कहते हैं। मनुष्य का देवता बाप ने ही बनाया। मनुष्य थे पतित। उनको ही पावन कैसे बनाया। बच्चों को कहा मामेकं याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। यह बात तुम किसको भीसुनावेंगे तो अन्दर में लगेंगे। अभी पतित से पावन कैसे बनेंगे। जरूर बाप को याद करना होगा। और संग बुधि का योग तोड़ एक संग जोड़ना है तब ही मनुष्य से देवता बनेंगे। ऐसे2 समझना चाहिए। तुमने जो समझाया वह तो ड्रामा अनुसार बिल्कुल ठीक ही था। यह तो समझते हो फिर भी दिनप्रति दिन पायन्टस मिलती ही रहती है। समझाने लिए मूल बात है कि हम पतित से पावन कैसे बने। बाप कहते हैं देह के सभी धर्म छोड़ अपन को आत्मा समझो। मुझे याद करो। हम अभी ब्राह्मण बने हैं। प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान। बाप हमको पढ़ाते हैं। ब्राह्मण बनने बिगर हम देवता कैसे बनेंगे। यह ब्रह्माभी पूरे 84 जन्मलेते हैं। फिर इनको ही पहला नम्बर में जाना पड़ता है। बाप आकर प्रवेश करते हैं। तो मूल बात है ही एक। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। देह अभिमान में आने से कहां-कहा टिकते रहते हैं। देहीअभिमानी तो सभी बन न सके। अपनी पूरी जांच रखनी होती है। हम कहां देहअभिमान में तो नहीं आते हैं। हम से कोई विकर्म तो नहीं होता है। बेकायदे चलन तो नहीं होती है। बहुतों से होती है। क्योंकि अभी कर्मातीत अवस्था नहीं हुई है। कर्मातीत अवस्था वाले के सभीदुःख दूर हो जाते हैं। सज़ाओं से भी छूट जाते हैं। ख्याल किया जाता है नम्बरवार सज़ाई बनती है। जरूर किसका कम पुरुषार्थ रहता है जिस कारण सज़ा खानी पड़ती है। धर्म में भी आत्मा ही सजा भोगती है। गर्भजेल में क्यों कहते हैं हमको बाहर निकालो। फिर हम यह नहीं करेंगे। आत्मा ने कहा। वही सजा खाती है। आत्मा कहती होगी ना। आत्मा ही कर्म-विकर्म करती है। यह कोई शरीर का काम नहीं। तो मुख्य बात अपन को आत्मा ही समझना है। देह में आने से देह अभिमानी बन जाते। ऐसी2 पायन्ट समझानी चाहिए। जो समझे बरोबर सभी कुछ आत्मा ही करती है। आत्मा ही बोलती है। अभी तुम सभी आत्माओं को वापस जाना है। तब ही यह ज्ञान भी मिलता है। फिर कब यह ज्ञान मिलेंगे नहीं। आत्माअभिमानी से सभी को भाई2 ही देखेंगे। शरीर की बात ही नहीं रहती। सोल बन गये हैं। फिर शरीर में लागत नहीं रहेगी। इसलिए बाप कहते हैं यह बहुत ऊंच स्टेज है। बहन भाई में भी लटक पड़ते हैं। भाई2 में भी लटक पड़ते हैं। परन्तु यह है लास्ट पायन्ट। अशरीरभव। आत्माअभिमानी भव। इसमें ही मेहनत है। पढ़ाई में भी सबजेक्ट होती है ना। समझते हैं हम इसमें फेल हो जावेंगे। फेल होने कारण और सबजेक्ट में भी ढीले हो पड़ते हैं। अभी तुम्हारी आत्मा बुधियोगवल से सोने का बर्तन होती जाती है। योग नहीं है तो नालेज भी कम हो जाती है। योग का ही जौहर नहीं है। यह भी है ड्रामा की नूंध। बाबा समझाते हैं बच्चों को कि अपनी अवस्था कैसे बढ़ानी चाहिए। देखना है हम आत्मा सारा दिन में कोई भी बेकायदे काम तो नहीं करती हैं। कोई भी ऐसी आदत हो तो फौरन छोड़ देना चाहिए। परन्तु फिर भी माया दूसरे तीसरे दिन करा ही देती है। ऐसी सूक्ष्म बातें चलती रहती है। यह है सभी गुप्त ज्ञान। मनुष्य क्या जाने। तुम बतलाते हो हम अपने ही खर्चा से अपने लिए सभी कुछ करते हैं। दूसरे के खर्चा से हम कैसे बनावेंगे। इसलिए बाबा हमेशा कहते हैं मांगने से मरना भला। सहज मिले सो दूध बराबर, मांग लिया सो पानी, मांग कर कोई से लेते हो तो वह लाचारी काशी करवट खाकर देते हैं तो

वह पानी हो जाता है। खैंच लिया सो रत बराबर। कई बहुत तंग करते हैं। कर्जा उठाते हैं। तो वह रत के समान हो जाता है। कर्जा लेने की ऐसी कोई दरकार ही नहीं है। दान देकर फिर वापस लिया इस पर भी हरिश्चन्द्र का भिशाल है। ऐसा भी मत करो। हिस्सा रख दो जो तुमको काम में भी आवे।

बच्चों को इतना पुरुषार्थ करना है जो अन्त में बाप की ही याद हो। और स्वदर्शनचक्रधारी भी हो। तब प्राण तन से निकले। तब ही चक्रवर्ती राजा बन जावेंगे। ऐसे नहीं कि पिछाड़ी में याद कर सकेंगे। उस समय ऐसी अवस्था हो जावेगी। नहीं। अभी से पुरुषार्थ करते2 उस अवस्था को अन्त तक ठीक बनाना है। शुरू करते रहना है। ऐसा न हो जो पिछाड़ी में वृति कहीं और जगह चली जाये। याद करने से ही पाप कटते रहेंगे। पवित्रता की बात में है मेहनत। पढ़ाई में इतनी मेहनत नहीं है। इस पर बच्चों का ध्यान अच्छा चाहिए। तब बाबा कहते हैं रोज अपने से पूछो हम ने कोई बेकायदे काम तो नहीं किया। नाम रूप में तो नहीं फंसता हूं। किसको देखकर लड्डू तो नहीं बन जाता हूं। कर्म इन्द्रियां से कोई बेकायदे कर्म तो नहीं करता हूं। सबको कम मेहनत है। कुमारियों को। क्योंकि इतना जास्ती सम्बन्ध नहीं जुटता है। शादी के बाद तो बहुत ही सम्बन्ध बढ़ जाता है। फिर उन सभी की याद मुश्किल टूटती है। विकार में गये तो बेरा ही गर्क। फिर निकलना मुश्किल है। क्योंकि पति ही सब कुछ हो जाता है ना। तब तो पति के मरने से या हुसन करते हैं। तुम लोग कह देते हो हमारी सगाई अथवा शादी शिव बाबा से हुई है। ऐसे भी नहीं कहना चाहिए। हम शिव बाबा को बाबा कहते हैं फिर सगाई किस बात की। हम बाप के बने हैं बेहद का वरसा लेने लिए। शिव बाबा उन से फिर सगाई? हरेक अक्षर बहुत ही ज्ञान युक्त निकालना है। ऐसे-वैसे अक्षर नहीं निकलनी चाहिए। हरेक बात बाप अच्छी रीत समझाते हैं।

मूल बात फिर भी कहते हैं अपना रोज पोतामेल देखो। व्यापारी लोग भी रोज का पोता मेल निकालते हैं ना। बाबा भी रोज का पोतामेल निकालते थे। झट मालूम पड़ जाता था आज इतना फायदा हुआ। तुम भी अपना पोतामेल निकालो। तो फिर मालूम पड़ेगा कितना नुकसान हुआ। फिर जिस से नुकसान हुआ वो काम तुम करेंगे नहीं। परन्तु बच्चे थक जाते हैं। पोतामेल रखते नहीं। बाबा कहते है पोतामेल नां रखने से भूले बहुत करते है। पोतामेल रखने से डर रहेगा। इस हिसाब से हमारा मतबा तो बहुत कम हो जावेगा। अच्छा यह भी बाबा को तो सुनाए देवे। बाबा आज हम से क्या फायदा हुआ क्या नुकसान हुआ। बाबा के सामने अगर जूठ बोले तो सोदा दन्ड पड़ जावे। नां सुनाने से भूले भी वृधि को पाती रहती है। अपने अन्दर से पूछ सकते हो हम ने क्या2 विकर्म किया। बाबा को तो अपनी कहानी छोटे पन से याद है। अभी तो बाबा ने समझ दी है। तब कहते है सुनाने से बाप भी समझावेंगे ऐसे2 होता है। सर्जन इन्जेक्शन लगाते है, राय देंगे सुनाने से तुम्हारी हलकाई हो जावेगी। बाबा तुमको ट्रस्टी बनाए देते है। तुम जानते हो इस पुरानी दुनियां में तो हमारा कुछ भी नहीं। हमको तो देही अभिमानी बनना है। यह हमारी मिलकियत तो नहीं है नां। कोई में अगर प्यार हो जाता है तो वो भी जैसे मिलकियत हो जाती है वो भी छोड़ देना चाहिए। पतित शरीर से लव हो गया नां। आत्मा प्युयर बन रही है। और पतित शरीर से लव हो वो भी नुकसान कार हो जाता। पुराने पतित शरीर से तो बिलकुल लव नां होना चाहिए। वो भी देह अभिमान हो जाता2 अनासक्त हो रहना चाहिए। सच्चा प्यार एक से। बाकी सब से अनासक्त प्यार। भल बच्चे आदि है परन्तु कोई में भी आसक्ती नहीं। जानते है यह जो कुछ देखते है यह तो खतम हो जाना है। तो इन से प्यार सारा निकल जाता। बाबा तो रोज समझाते रहते है ममत्व कुछ भी नहीं रखना चाहिए। एक में ही प्यार रहे। बाकी नाम मात्र अनासक्त। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुड मार्निंग। रूहानी बाप का रूहानी बच्चों को नमस्ते। ओम।